www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-7* *July 2025***

जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों का आधुनिक युग में प्रभावः विश्लेषणात्मक अध्ययन

सलाउद्दीन सैफी

शिक्षा संकाय विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उ0प्र0

कीर्ति महाजन

शिक्षा संकाय विभाग, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, अमरोहा, उ0प्र0

सारांश

पाश्चात्य जगत में अनेक विचारधाराओं को लेकर आंदोलन हुए। इनमें एक विचारधारा हैं प्रकृतिवाद। यह एक ऐसी विचारधारा हैं, जिसने अपने सिद्धांतों एवं परम्परागत रूढ़िवादी मान्यताओं के विरोध में जनमानस के लिए एक उचित, जीवन दर्शन प्रदान किया। प्रकृतिवादी विचारधारा वैसे तो प्राचीन काल से ही मौजूद थी, परन्तु इसे व्यवस्थित और व्यावहारिक विचारधारा के रूप मे प्रस्तुत करने का पूर्ण श्रेय जीन जैक्स रूसों को जाता है। रूसो के अनुसार बालक को शिक्षा के लिए सामाजिक नहीं बल्कि प्राकृतिक परिवेश की आवश्यकता होती है। रूसो ने प्रकृति की ओर लौटो तथा प्रकृति का अनुसरण करने का नारा दिया है। उनका मानना था कि प्रकृति बालक की शिक्षा का सबसे बड़ा स्रोत है। प्राकृतिक शिक्षा से रूसो प्राकृतिक मानव का विकास करना चाहते थे। रूसो के सिद्धान्त के अनुसार बालक के बुरे कार्यों का दण्ड प्रकृति अवश्य देती है। इसलिए उसे किसी प्रकार का दण्ड न देकर प्राकृतिक दण्ड द्वारा अनुशासित होने दिया जाना चाहिए।

कुंजी शब्द– शैक्षिक विचार, प्रकृतिवाद, विश्लेषण।

प्रस्तावना

अनेक विद्वानों ने शिक्षा के अर्थ को स्पष्ट किया हैं, इनमें भारतीय विद्वानों में महात्मा गॉधी, डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, महर्षि अरविन्द, रविन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानंद व अन्य शामिल हैं। वहीं पाश्चात्य विद्वानों में सुकरात, प्लेटो, अरस्तू, जीन जैक्स रूसो, जॉन लॉक, जॉन डीवी व अन्य शामिल हैं। सभी विद्वानों ने शिक्षा के अर्थ को अपने–अपने शब्दों में व्यक्त किया। जीन जैक्स रूसो ने प्रकृतिवादी विचारधारा को व्यवस्थित और व्यावहारिक रूप दिया। महान दार्शनिक, युग प्रवर्तक, शिक्षा मनीषी, उद्भट राजनीतिज्ञ, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री एवं अद्वितीय विचारक जीन जैक्स रूसो का जन्म इटली के जेनेवा नगर में 28 जून, 1712 में एक गरीब घड़ीसाज पिता के घर एक निर्धन परिवार में हुआ। जन्म के कुछ दिन बाद उनकी माता का देहान्त हो गया, इसलिये उनके पालन–पोषण का सम्पूर्ण भार उनके पिता पर आ गया। पिता घड़ीसाज का काम करता था और बच्चे की ओर कोई ध्यान नहीं देता था। बचपन से ही वह प्रकृति–सौन्दर्य का प्रशंसक था और उसका यह प्रकृति–प्रेम बराबर बढ़ता गया। अध्ययन और प्रकृति के अवलोकन से रूसो मनस्वी और भावुक बन गया। मार खाने के डर से वह स्कूल नहीं जाता था, किन्तु उसे पढ़ने का शौक था। 6 वर्ष की आयु में ही उसने साहित्य, धर्म और इतिहास सम्बन्धी अनेक पुस्तकें पढ़ डालीं, जिनका उसके ऊपर गहरा प्रभाव पड़ा। (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 280)

रूसो ने अनेक रचनाएँ लिखी। उनकी पुस्तक डिस्कोर्स ऑन इनइक्वैलिटी, जा तर्क देता है कि निजी संपत्ति असमानता का स्त्रोत है, और द सोशल कॉन्ट्रैक्ट, जो एक वैध राजनीतिक व्यवसाय के आधार को रेखांकित करता है, आधुनिक राजनीतिक और सामाजिक विचारों में आधारशिला हैं रूसो का भावुक उपन्यास जूली, या न्यू हेलोइस (1761) कथा साहित्य में प्रीरोमैंटिसिज्म और रोमांटिकवाद के विकास के लिए महत्वपूर्ण था। उनकी महान कृति "एमिल" एक शैक्षिक ग्रंथ है। दि न्यू हेलॉयज, जो गृह शिक्षा एवं माता–पिता कर्त्तव्यों का उल्लेख करती हैं। डिसकोर्स ऑन पॉलिटिकल एकोनोमी, कॉनफेशन साफ दि विकार ऑफ सेवाय, धार्मिक विचारों की विवेचना करती हैं। रिपब्लिक इनकी महत्वपूर्ण कृति हैं।

रूसो के शिक्षा सम्बन्धी विचार

रूसो बालक की प्रवृत्तियों को एक युवा की प्रवृत्तियों से एकदम अलग मानते थे। उनके अनुसार, "बालक को बालक समझना चाहिए, उसे युवा (प्रौढ़) व्यक्तियों के कर्तव्यों में शिक्षा देना भूल है।'' जो वस्तु प्रौढ़ के लिए उपयोगी है वह बालक के लिए हानिकर हो सकती है। अतः बालक को उपयोगी वस्तुओं के विषय में जानकारी देने के लिए सर्वप्रथम उसके स्वभाव का गहन अध्ययन करना चाहिए। (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 281) रूसो ने शिक्षा की परिभाषा देते हुए लिखा है– ''बालक की स्वाभाविक शक्तियों तथा योग्यताओं का आन्तरिक विकास करना ही शिक्षा है।'' (डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, पेज 139) रूसो के अनुसार, शिक्षा का तात्पर्य विभिन्न अंगों और शक्तियों के स्वाभाविक विकास से है। यह स्वाभाविक विकास बालक की स्वाभाविक आवश्यकताओं को समझे बिना नहीं हो सकता। उसकी स्वाभाविक आवश्यकताओं को समझने के लिए हमें उसके स्वभाव को समझना चाहिए। रूसो का यह विचार है कि ''बालक को शिक्षा देने के पूर्व सर्वप्रथम उसके स्वभाव को समझना चाहिए।'' शिक्षा–क्षेत्र में रूसो की यह सबसे बड़ी देन है। (डॉ• ए• बी• भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 281)

इस प्रकार रूसो के अनुसार शिक्षा के दो रूप हैं– एक सकारात्मक (निश्चयात्मक) शिक्षा और दूसरा नकारात्मक (निषेधात्मक) शिक्षा। रूसो के अपने शब्दों में– निश्चयात्मक शिक्षा वह शिक्षा है जो मनुष्य के विकास से पहले उसके मस्तिष्क का विकास करती है और बच्चे को प्रौढ़ों के कर्त्तव्यों से परिचित कराती है। और नकारात्मक शिक्षा वह शिक्षा है जो ज्ञान के साधन अवयवों को पहले मजबूत करती है। (प्रो0 रमन बिहारी लाल व सुनिता पलोड़, पेज 298)

रूसो विद्यालय शिक्षा के विरूद्ध था और निषेधात्मक शिक्षा को उपयुक्त मानता था। रूसो के अनुसार, ''प्रचलित व्यवहार से बिल्कुल उल्टा करो और तुम सदैव ठीक करोगे।'' (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 281) नकारात्मक शिक्षा का अर्थ निष्क्रियता नहीं है, यह इससे बहुत दूर है। यह सद्गुण प्रदान नहीं करती अपितु बुराई से बचाती है, यह सत्य प्रदान नहीं करती अपितु भूल से बचाती है। (प्रो0 रमन बिहारी लाल व सुनिता पलोड़, पेज 298)

शिक्षा में प्रकृतिवाद का आन्दोलन ऐसी ही सामाजिक परिस्थिति में हुआ और इसका नायक रहा रूसो । रूसो ने तत्कालीन सभ्यता की कटु आलोचना की। सभ्यता में फैशन एवं कृत्रिमता का बोलबाला रहता है। उनके अनुसार, प्रकृति से दूर रहकर मनुष्य सभ्य होने का दम्भ करता है किन्तु यह उसके पतन का चिन्ह है। (डॉ0 रामशकल पाण्डेय, पेज 79) बालक की शक्तियों का स्वाभाविक विकास रूसो के अनुसार तब ही सम्भव हो सकता है, जबकि बालक में प्रकृति–प्रेम की भावना जाग्रत की जाये और उसने प्राकृतिक शिक्षा को ही प्राथमिकता दी है। (डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, पेज 139)

प्रकृतिवादी महान विचारक जीन जैक्स रूसो ने अपने शैक्षिक विचारों से शिक्षण के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं– शिक्षा के सम्प्रत्यय, उद्देश्य, शिक्षण विधियॉ, पाठयक्रम, शिक्षक, छात्र, अनुशासन आदि को प्रभावित किया है। आधुनिक युग को इनके शैक्षिक विचारों ने किस सीमा तक प्रभावित किया है। इसका अध्ययन शोधार्थी ने अधोलिखित शोध समस्या का चुनाव करके किया है।

शोध समस्या कथन–

जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों का आधुनिक युग में प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

शोध समस्या के उद्देश्य–

1. जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचार

2. जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों का आधुनिक युग में प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

शोध की अध्ययन विधियॉ–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्धारित शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु शोधार्थी द्वारा ऐतिहासिक एवं वर्णात्मक शोध विधियों प्रयोग किया गया है।

जीन जैक्स रूसो के अनुसार शिक्षा का संप्रत्यय–

रूसो का मानना है कि शिक्षा एक प्राकृतिक क्रिया है जिसके द्वारा बच्चे की जन्मजात शक्तियों का प्राकृतिक विकास होता है। अतः सब बच्चों को उनसे प्राकृतिक विकास का अवसर मिलना चाहिए। (प्रो• रमन बिहारी लाल व सुनिता पलोड़, पेज 297) रूसो के अनुसार शिक्षा का अर्थ केवल सूचना देना ही नहीं वरन् बालक का मनुष्य के रूप में निर्माण करना है। अतः ज्ञान का संचय करना या शिक्षा कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो बाहर से ली जा सके। वरन् इसने शिक्षा के तीन स्रोत माने– 'प्रकृति', 'मानव' व 'पदार्थ'। प्रकृति द्वारा शिक्षा से उसका आशय – ''विभिन्न अंशों व शक्तियों के स्वाभाविक विकास'' से है। यह स्वाभाविक विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक कि शिक्षक, शिक्षार्थी की स्वाभाविक प्रवृत्तियों तथा आवश्यकताओं को नहीं समझता। इसके लिए बालक के स्वभाव का अध्ययन करना होगा। उनका यह विचार अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। (डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, पेज 139)

जीन जैक्स रूसो के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य–

रूसो का मानना था कि शिक्षा का मकसद नैतिकता का विकास करना है। उनका मानना था कि नैतिकता का विकास प्राकृतिक परिणामों के जरिए होना चाहिए, न कि व्याख्यानों के जरिए। उनके अनुसार शिक्षा एक प्राकृतिक क्रिया है और बच्चों को उनके प्राकृतिक विकास का मौका मिलना चाहिए। कमजोर शरीर से कमजोर दिमाग बनता है। शिक्षा में मनुष्य, प्रकृति, और पदार्थ का समन्वय होना चाहिए। ये तीनों ही बालक के विकास के साधन हैं। रूसो का मानना था कि बच्चों को स्वयं अनुभव करके सीखना चाहिए।

जीन जैक्स रूसो के अनुसार पाठ्यक्रम–

रूसो बच्चे के ऊपर अपनी तरफ से कुछ भी लादने के पक्ष में नहीं थे। वे बालक की अपनी प्रकृति के अनुकूल पर्यावरण तैयार करने की बात कहते थे। उन्होंने मनोवैज्ञानिक स्थिति के अनुसार उनके लिए पाठ्यचर्या का विकास किया है। वे शैशव अवस्था के बालको में खेलने, कूदने, दौड़ने और गायन में रूचि दिखलाते हैं। अतः इस स्तर पर बच्चों को इसी के लिए अवसर देने चाहिए। जब बच्चा बाल्यावस्था को प्राप्त करता हैं तब उसके शारीरिक विकास के लिए खेलने, कूदने, दौड़ने तथा तैरने के पूर्ण अवसर प्रदान किये जाए। उनके अनुसार युवावस्था में उन्हें प्राकृतिक विज्ञानों की शिक्षा दी जाए। इसके साथ–साथ भाषा, गणित, भूगोल, हस्तकार्य, संगीत और सामाजिक विज्ञान की शिक्षा दी जाए यचर्या निशिचित की गईं। रूसो बालक का सर्वागीण विकास करना चाहते थे। वे युवावस्था के समय निश्चयात्मक शिक्षा को प्रारम्भ कर देने के पक्ष मे थे। (प्रो0 रमन बिहारी लाल व सुनिता पलोड़, पेज 299–300)

शिक्षण विधियॉ–

रूसो चाहते थे कि बालक अपने प्रत्यक्ष अनुभवों से सीखे। उन्होंनं कहा भी था कि, ''अपने छात्र को मौखिक पाठ न दो, उसको अनुभव के साथ पढ़ाया जाना चाहिये।'' उनके अनुसार छात्र को करके सीखने के पूर्ण अवसर दिए जाने चाहिए। उनका मानना था कि जब भी हो सके, कार्य करते हुये सीखने की प्रेरणा दो और जब कार्य करना सम्भव न हो, केवल उसी दशा में शब्दों का निर्देश दो। वे बालक को खेल–खेल में सीखाना चाहते थे ताकि बच्चे को मानसिक दबाव ना लेना पड़े। उसका यह मानना था कि बच्चे के लिये काम या खेलना एक जैसे हैं। रूसो ने कहा, ''सामान्यतया स्वयं चीज के स्थान पर उसका स्थानापन्न नहीं हो सकता।'' (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 283) अतः जब सम्बन्धित चीज दुर्लभ हो, केवल उन्हीं दशाओं में प्रतीकों अथवा चित्रों का प्रयोग किया जाना चाहिये। साथ ही बालक को कम से कम 12 वर्ष तक पुस्तकों से दूर रखना चाहिए।

स्त्री शिक्षा–

रूसो के अनुसार नारी शिक्षा का उद्देश्य पुरूष को सुखी बनाना है। इसलिए उसने लिखा हैं कि ''पुरूष विद्रोह के लिए तथा स्त्री आज्ञाारिता के लिए हैं।'' (डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, पेज 142) अतः रूसो के

अनुसार सबसे पहले स्त्रियों को शारीरिक शिक्षा देनी चाहिए। जिससे प्रत्येक स्त्री अपने शारीर को सुन्दर व सुगठित बना सके। यदि शरीर स्वस्थ होगा तो संतान भी स्वस्थ व बलवान होगी। रूसो महिलाओं के लिए पुरूषों जैसी शिक्षा का पक्षधर नहीं हैं। उसकी धारणा के अनुसार पुरूष और महिलाओं के कार्य पूर्णतः भिन्न–भिन्न है। महिलायें सेवा करने के लिए जन्म लेती हैं और पुरूष सुख पाने के लिए जन्म लेते हैं। (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 283) रूसो चाहते थे कि महिलाओं को गृह कार्य में निपुण बनाने का प्रयास किया जाए।

अध्यापक की भूमिका–

शिक्षा प्रक्रिया में रूसो अध्यापक को बहुत छोटा स्थान देता है। इनके अनुसार बच्चों को निर्देशन नहीं मार्ग–दर्शक की आवश्यकता होती है। अध्यापक का प्रधान दायित्व बच्चे को सीखने के लिये प्रेरित करने का है। (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 284) इनके अनुसार बच्चे को केवल प्रेरित किया जाए, बाकी वह स्वयं सीख लेगा।

शिक्षार्थी–

इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में सबसे अधिक महत्त्व विद्यार्थी को दिया है। इन्होने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने स्वाभाविक विकास करने के अवसर देने चाहिए, उन्हें किसी प्रकार के बंधन में न रखा जाए। (प्रो• रमन बिहारी लाल व सुनिता पलोड़, पेज 302) वे बालक को स्वतंत्र छोड़ देने के पक्ष मे थे।

रूसो के अनुशासन संबंधी विचार–

रूसो बालक की स्वतंत्रता का समर्थक है और उस पर किसी भी प्रकार का बाहरी नियन्त्रण नहीं चाहता। रूसो बालक को प्राकृतिक अनुशासन की शिक्षा देना चाहता हैं। (डॉ• अनीता कोटपाल व डॉ• धीरज सिंह, पेज 142) बालक को प्रकृति के नियमों का पालन करना चाहिए। यदि कोई भी बालक प्रकृति के विपरीत कार्य करता है तो उसे तुरन्त दण्ड मिल जाता हैं और अगर प्रकृति के अनुकूल कार्य करता है तो स्वतः ही प्रकृति उसे पुरस्कार प्रदान करती है।

एमिल–

'एमिल' रूसो की एक महान कृति है, जिसमें उन्होंने अपने शिक्षा सम्बन्धी विचारों का उल्लेख किया है। रूसो पहले ऐसे आधुनिक विचारक मे से थें जिन्होंने "उपदेशात्मक शिक्षा" के लिए एक अधिक प्राकृतिक या प्रमाणिक विकल्प सुझाये। एमिल के माध्यम से रूसो का उद्देश्य यह दिखाना हैं कि कैसे एक प्राकृतिक शिक्षा, समाज की कृत्रिम और औपचारिक शिक्षा के विपरीत, 'एमिल' को अपने मूल स्वभाव के प्रति सच्चे रहते हुए सामाजिक, नैतिक और तर्कसंगत बनाने में सक्षम बनाती है। 'एमिल' पुस्तक का उद्देश्य शिक्षा को कृत्रिमता से बचाना हैं। (शर्मा एवं सक्सेना, पेज–80)

'एमिल' के अंत में रूसो ने 'सोफी' जो कि एमिल की पत्नी हैं, की शिक्षा का वर्णन किया है। उनके अनुसार यौन भिन्नता के कारण, एक लड़की को पुरूष बनने के लिए शिक्षित नहीं किया जा सकता। रूसो के अनुसार एक महिला को परिवार का केंद्र, एक गृहिणी और एक मॉ होना चाहिए, खुद को उससे ज्यादा एक अच्छी प्रतिष्ठा पाने के लिए चिंतित करना चाहिए और भावनाओं के एक साधारण धर्म से संतुष्ट होना चाहिए।

आधुनिक युग में शिक्षा का स्वरूप–

लॉर्ड मैकाले (1835) की शिक्षा नीति ने भारत की शिक्षा प्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है। जिससे एक नया भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग उभरा, जो पश्चिमी विचारों से प्रभावित था। इसने नये विचारों और मूल्यों को जन्म दिया। इससे आधुनिक शिक्षा का प्रसार हुआ और और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला।क ालांतर में, चार्ल्स वुड घोषणा–पत्र में तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था के पुनरीक्षण तथा भविष्य में शैक्षिक पुननिर्माण हेतु सुनिश्चित तथा बहु–आयामी शिक्षा नीतिको सूची बद्ध करने का प्रयास किया गया।

1982 में ''भारतीय शिक्षा आयोग'' की नियुक्ति हुई। इस आयोग का अध्यक्ष सर विलियम हण्टर था। इसलिए इसे हण्टर कमीशन कहकर पुकारा जाता है। इन्होंने कहा कि, "राजकीय शिक्षण संस्थाओं को उन स्थानों में चलने दिया जाये जहॉ इनकी आवश्यकता हैं किन्तु सरकार का मुख्य कर्त्तव्य व्यक्तिगत शिक्षा संस्थाओं की उन्नति और प्रसार करना होना चाहिए।शिमला शिक्षा सम्मेलन (1901) में प्राथमिक शिक्षा का अनिवार्य बनाने और सभी बच्चों के लिए शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया। विश्वविद्यालय में सुधार लाने के

लिए उन्हें शोध केंद्र बनाने पर जोर दिया गया। भारतीय विश्वविध्ज्ञभ्द्यालय आयोग (1902) को लॉर्ड कर्जन के नेतृत्व में गठित किया गया। इसने विश्वविद्यालयों को शिक्षण और अनुसंधान के केंद्र बनाने पर जोर दिया। भारतीय विश्वविलय अधिनियम (1904) भारतीय उच्च शिक्षा के इतितहास में एक महत्वपूर्ण तील का पत्थर माना जाता है। इसमें विश्वविद्यालयों पर सरकार का नियंत्रण बढ़ाया गया और सरकार को विश्वविद्यालयों के नियमों में संशोधन करने और नए नियम बनाने का अधिकार दिया गया।

सैडलर आयोग (कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग) 1917–19 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सुधार लाने के लिए इंटरमीडिएट कक्षाओं को विश्वविंद्यालयों से अलग करने का सुझाव दिया गया। आयोग ने विश्वविद्यालयों को अधिक स्वायत्ता देने व नए विशविद्यालयों की स्थापना पर जोर दिया। साइमन आयोग मं 1929 में फिलिप हार्टोग के नेतृत्व में हार्टोग निकाय का गठन किया था ताकि शिक्षा पर रिपोर्ट प्रस्तुत की जा सकें। स्कूलों और विश्वविद्यालयों के विस्तार के परिणाम स्वरूप शिक्षा के स्तर में गिरावट आई थी। शैक्षिक प्रगति पर अद्यतन जानकारी प्रदान करने के लिए हर्टोग समिति की स्थापना की गई। वर्धा योजना (बुनियादी शिक्षा) 1937 गॉधी जी ने कहा हैं कि, "शिक्षा से मेंरा अभिप्राय बालक और मनुष्य की सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वतोमुखी विकास से है।" (शर्मा एवं सक्सेना, पेज–51)

आजादी के बाद "विश्वविद्याल शिक्षा आयोग" 1948–49 की नियुक्ति की गई। इसके अध्यक्ष डॉ• सर्वपल्ली राधाकृष्णन थे इसीलिए इसे राधाकृष्णन आयोग भी कहते है। आयोग के शब्दों में, "भारतीय विश्वविद्यालय आयोग शिक्षा के विषय में रिपोर्ट देना और उन सुधारों के सम्बन्ध में सुझाव प्रस्तुत करना जो देश की वर्तमान और भावी आवश्यकताओं के लिये वांछनीय हो।" (शर्मा एवं सक्सेना, पेज–70) माध्यमिक शिक्षा (मुदालियर) आयोग 1952–53 के अध्यक्ष डॉ0 ए0 लक्ष्मण स्वामी मुदालियर के अनुसार इस आयोग का उद्देश्य छात्रो को व्यावसायिक कुशलता की उन्नति, नेतृत्व का विकास, जनतंत्रीय नागरिकता का विकास करना था। आयोग देश की शिक्ष प्रणाली को ओर अधिक प्रभावी और समावेशी बनाना चाहता था।

भारतीय शिक्षा (कोठारी) आयोग 1964–66 का गठन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली का व्यापक मूल्यांकन करना और देश के विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा नीति बनाने के लिए सिफारिशें करना था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) का उद्देश्य भारत की शिक्षा प्रणाली को देश के विकास की आवश्यकताओं और बदलते समय के अनुरूप बनाना था। इस नीति के माध्यम से भारत सरकार ने शिक्षा को सभी के लिए सुलभ बनाने, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने और देश के समग्र विकास में शिक्षा की भूमिका को मजबूत बनाने का प्रयास किया।

संशोधित शिक्षा नीति (एन0 ई0 पी0 1992) या जर्नादन रेड्डी समिति का गठन किया गया। इसका उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नाति 1986 की खामियों को दूर करना था। सर्व शिक्षा अभियान (2001) भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है जिसका उद्देश्य 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना है। इस अभियान का लक्ष्य है कि देश का हर बच्चा स्कूल जाए और शिक्षित हो। शिक्षा का अधिकार अधि ानियम 2009 भारत में शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह 1 अप्रैल 2010 से प्रभावी हुआ। इस अधि ानियम का मुख्य उद्देश्य बालाके को अनिवार्य, निःशुल्क, अनिवार्य, गुणवत्तपूर्ण, भेदभाव रहित, समावेशी शिक्षा प्रदान करना था।

रूसो के शैक्षिक विचारों का आधुनिक युग में प्रभाव का विश्लेषण–

किसी राष्ट्र का निर्माण तभी सम्भव है जब उस राष्ट्र के नागरिकों का सर्वांगीण विकास हो। नागरिकों का सर्वांगीण विकास करने के लिए शिक्षा का विकास होना अनिवार्य है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, बाल केंद्रित हैं। बालक को केंद्र बिंदु माना गया है। रूसो भी बाल केंद्रित शिक्षा का पक्षधर रहा है। आधुनिक शिक्षा में शारीरिक शिक्षा के लिए विशेष रूप से शिक्षक रखे जाते हैं, जो विद्यालयों में फिजिकल एक्टिविटी कराते है। रूसो का मानना था कि, ''कमजोरी धृष्टता की निशानी है।'' (डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, पेज 140) स्वस्थ शारीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क कर निर्माण होता है।

निष्कर्ष एवं सुझाव–

विभिन्न पक्षों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि जीन जैक्स रूसो के शैक्षिक विचारों आधुनिक शिक्षा को गहराई से प्रभावित किया है। रूसो ने बालक को शिक्षा का केंद्र माना। उन्होंने कहा कि शिक्षा को बच्चे की

प्राकृतिक विकास के अनुरूप होनी चाहिए। यह विचार आधुनिक शिक्षा में बाल केंद्रित शिक्षा के दृष्टिकोण का आधार बना।

''प्रकृति की ओर लौटो'' इनकी विचारधारा का प्रमुख नारा है। (डॉ0 रामशकल पाण्डेय, पेज 44) यह विचार आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में उपयोगी सिद्ध हुआ है, यह प्रकृति शिक्षा और पर्यावरण शिक्षा में दिखाई देता है। रूसो ने शारीरिक विकास को बौद्धिक विकास के समान महत्त्व दिया। आज आधुनिक युग में खेलकूद और शारीरिक शिक्षा को विद्यालयों में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। मुनरो ने रूसो के योगदान पर टिप्पणी की थी, ''वह अनुसरकर्ताओं का अग्रणी था, सामान्य यात्रा के विस्तृत राजमार्ग बनने तक उसने निर्जन वन में मार्ग दिखाया था।'' (डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर, पेज 287)

आधुनिक युग में रूसो के शिक्षा संबंधी विचारों को व्यावहारिक रूप में अपनाए जाने की आवश्यकता हैं। बच्चों के पाठयक्रम को अधिक व्यावहारिक और रचनात्मक बनाया जाना चाहिए। शिक्षको को पारंपरिक शिक्षण विधियों के बजाय नए और रचनात्मक तरीकों को अपनाना चाहिए। शिक्षकों को रूसो के विचारों के बारे में प्रशिक्षित किया जाना चाहिए ताकि वे इसे अपनी कक्षाओं में लागू कर सकें।

Author's Declaration:

The views and contents expressed in this research article are solely those of the author(s). The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible for any errors, ethical misconduct, copyright infringement, defamation, or any legal consequences arising from the content. All legal and moral responsibilities lie solely with the author(s).

संदर्भ ग्रंथ सूची–

1. प्रो0 रमन विहारी लाल, सुनीता पलोड़ ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. डॉ0 रामशकल पाण्डेय ''शिक्षा दार्शन और शिक्षाशास्त्री'' श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. डॉ0 ए0 बी0 भटनागर व डॉ0 अनुराग भटनागर ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. डॉ0 गया सिंह ''उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक''' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. डॉ0 अनीता कोटपाल व डॉ0 धीरज सिंह, डॉ0 योगिता शर्मा, डॉ0 निधि ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य'' विद्या प्रकाशन मंदिर प्रा0 लि0।
6. डॉ0 गिरीश पचौरी ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय परिदृश्य'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
7. डॉ0 जौहरी ''जेंडर स्कूल तथा समाज'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
8. शर्मा एवं सक्सेना, ''समकालीन भारत और शिक्षा'' आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।

Cite this Article-

'सलाउद्दीन सैफी', कीर्ति महाजन, 'जीन जैक्स रूसो के भौक्षिक विचारों का आधुनिक युग में प्रभावः विश्लेषणात्मक अध्ययन', *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:07, July 2025.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i70004

Published Date- 03 July 2025